International Journal of Applied Research 2017; 3(9): 195-196

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(9): 195-196
www.allresearchjournal.com
Received: 11-07-2017
Accepted: 12-08-2017

गुंजन कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय–हिन्दी–विभाग, ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
गुंजन कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय–हिन्दी–विभाग, ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

नागार्जुन के कविता में मजदूर

गुंजन कुमारी

सारांश
नागार्जुन को मजदूर, श्रमिकों की मजबूरी अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है। यही कारण है कि व्यक्तिगत ईमानदारी और नैतिकता का स्रोत सामंतवाद नहीं भारत के सर्वसाधारण श्रमिक जनता है। इसलिए सामंती पूँजीवादी के विरूद्ध नागार्जुन ने शोषित, दलित, मजदूर जनता को अपनी कविता का विषय बनाकर उनके भीतर सामंतों के खिलाफ लड़ने की, आवाज उठाने की अजेय शक्ति का संचार किया है।

प्रस्तावना
कविवर नागार्जुन की काव्य–यात्रा बहुत लम्बी रही है। वे निरन्तर निष्ठापूर्वक साहित्य–साधना में निरत रहे। उनकी कविताओं के प्रमुख स्वर रहे हैं– समसामयिक जीवन की विसंगतियाँ, सर्वहारा के प्रति सहानुभूति, शोषक–बुर्जुआ वर्ग के प्रति आक्रोश, साम्राज्यवाद और साम्प्रदायिकता का विरोध, क्रांति की भावना, प्रकृति–प्रेम आदि है।
प्रगतिवादी कवियों ने हमेशा मजदूर वर्ग का पक्ष लिया है। नागार्जुन स्वयं भी निम्न मध्यवर्ग परिवार से आए है और गाँव में उनका सीधा संपर्क श्रमजीवी वर्ग, किसान और मजदूरों से रहा है। श्रमजीवी मजदूरों को क्रांति की लड़ाई के लिए उत्साहित किया है। मजदूरों के हक के लिए नागार्जुन भी मजदूर आन्दोलन के साथ जुड़े हुए थे। नागार्जुन के समस्त साहित्य का केन्द्र सामाजिक चेतना है। उनकी कविताएँ उन्हें सामाजिक चिंतक के रूप में उभारती है। वे कृषक मजदूर, आदिवासी, नारी समाज के प्रति भावुक ही नहीं, चिंतित हैं। यही चिंता उनके काव्य का मूल स्वर है। डॉ0 अजय तिवारी ने लिखा है–
''नागार्जुन की भावुकता और उल्लास के तरंगित प्रसंग है जहाँ वे समाज की प्रत्येक पीड़ा को माँ की तरह गोद ले लेते हैं और व्यापक सहानुभूति का वातावरण रचते हैं।''[1]
कुली और मजदूरों का जीवन बहुत ही संघर्षपूर्ण है। वे घूल और धुएँ में निरंतर श्रम करते हैं। उनके हृदय में राष्ट्रानुराग सीमातीत है। स्वप्न में भी वे धरती की पुकार सुनते हैं।

''कुली मजदूर है
बोझा ढ़ोते हैं खींचते हैं ठेला
धूल–धुआँ भाप से पड़ता है सबका
थके मांदे जहाँ–तहाँ हो जाते हैं ढ़ेर
सपने में भी सुनते हैं धरती की धड़कन।''

नागार्जुन की समस्त कविताएँ उनके तेरह काव्य संग्रहों में संकलित है। इसके अलावा इन्होंने तीन खंडकाव्यों का सृजन किया है। नागार्जुन की लगभग 650 कविताएँ कवि तपस्वी होने की साक्ष्य देती है। नागार्जुन की सृजनात्मकता समस्टि के प्रति समर्पित है। उनकी समस्त कविताओं में सामाजिक भाव–बोध समाहित है। वे समाज के सर्वहारा मजदूर वर्ग के प्रतिनिधि कवि है। 'प्रेत का बयान' एक अध्यापक के जीवन का जीवंत दस्तावेज है। 'छोटे बाबू' कविता में बंधे बधाये स्थिर वेतन एवं सुरक्षा के समान दिन प्रतिदिन बढ़ती महँगाई के दो पाटों के बीच व्यथित व्यक्ति की त्रासदी है। नागार्जुन आम आदमी के प्रति सहृदय हैं। गांधी ने बहुत कहा था कि– ''जब–जब मैं दुविधा में पड़ता हूँ, मैं हिन्दुस्तान के उस सबसे गरीब आदमी का चेहरा याद करता हूँ जिसे मैंने देखा है। वही नुस्खा करुणामूर्ति बुद्ध के शिाष्य नागार्जुन ने अपने मन में कहीं पाल रखा है। इसी कारण नागार्जुन जहाँ कहीं खुरदरै पैर देखते हैं, अन्याय की बू पा लेते हैं, बिदक उठते हैं।''[2]
नागार्जुन के समय में ब्रिटिश पूंजीवादी का प्रसार और शोषण था। अंग्रेजों ने जो उद्योग–धंधे प्रस्थापित किए थे उनका मूल उद्देष्य लोगों में समृद्धि का सिद्धांत नहीं था। ''जमींदार वर्ग मुख्यतः ब्रिटिश सरकार की उपज थी। यह वर्ग विलासी और मूलतः रूढ़िवादी और अनुदयशील था।

जमींदार वर्ग अंग्रेजों के सहयोगी और किसान मजदूरों के शोषक थे। भारत की इतनी आबादी को दबाकर रखने के लिए एक नितांत आवष्यक था, वे एक ऐसा वर्ग पैदा करें जो उनकी शक्ति के लिए एक सामाजिक साधन तैयार करे जिसे भारत की लूट में से चंद टुकड़े मिलते रहे और वह मजे लूटते रहे। ये शोषक श्रम तो करते नहीं स्वयं मजे लूटते और भोग विलास में डूबे रहते।''[3]
नागार्जुन ने श्रमिकों और किसानों को पूरा साथ दिया है। वे साम्राज्यवादी एवं पूंजीवादी दानवों की मायावी चुंगल से उन्हें मुक्त करने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहे हैं। वर्ग वैषम्य के चित्र कवि के समय–समय पर दर्शाकर उनके शाँतिमय दिन लौट आने की उम्मीद रखता है। आजादी के किसान मजदूरों की हालत देखकर कवि दुःखी हो जाते हैं। नई पीढ़ी बरगद के पत्ते खाने पर विवश हैं। क्या होगा ऐसे वृक्षों का? कब होगा इनका उद्धार?

''बढ़ा है आगे को बेहतर पेट
धंसी–धंसी आँखे
फूले–फूले गाल
टाँग है कि तीलियाँ, अटपटी चाल
दो छोटी एक बड़ी
लगी है थिगलियाँ पीछे की ओर
मवाद, मिट्टी, पसीना और वक्त
चार–चार दुष्मनों की खाए हुए मार
आंत की मरोड़ छुड़ा न पाई बरगद की फलियाँ
खड़ी है नई पौध पीपल नीचे खाद की खोज में
देख रहा ऊपर
कि फलियाँ गिरेंगी
पेट भरेगा
और फिर जाकर
सो रहा, चुपचाप झोपड़े के अंदर
भूखी माँ की पेट से सटकर।''[4]

मजदुर हमेशा से ही अभावों की जिंदगी गुजारता आया है। कभी–कभी तो उसे पेट भर खाना भी नसीब मुष्किल हो जाता है। आजादी के बाद इतने साल गुजर जाने के बाद भी इस परिस्थिति में किसी भी प्रकार का सुधार नहीं आया। पूँजीपतियों को बुर्जुआ तथा मजदुरों को सर्वहारा वर्ग कहा जाता है। परिवर्तन सर्वहारा वर्ग द्वारा ही संभावित है। भारत में मजदुरों की दीन–हीन अवस्था का नागार्जुन ने एक दर्दनाक विंब प्रस्तुत किया है–

''खाली नहीं माइन्ड, खाली नहीं ब्रेन
खाली है हाथ, खाली है पेट,
खाली है थाली, खाली है प्लेट।''

डॉ0 दुर्गाशंकर मिश्र लिखते है– ''प्रगतिवादी कवि शोषितों की दशा का यथातथ्य चित्रण हमेशा करते आए हैं। इन कवियों ने हमेशा यथार्थवादी दृष्टिकोण से शोषितों एवं विपन्नों के प्रति जिस सच्ची सहानुभुति का चित्रण किया है, प्रगतिवादी के पूर्व हिन्दी कविता में ऐसा चित्रण कभी नहीं हुआ।''[5]
नागार्जुन को मजदुरों के जीवन तथा रहन सहन का निकट का अनुभव है। 'खुरदरे पैर', बिना तो आती नहीं' आदि कविताओं में कवि ने श्रमजीवी तथा मजदूर आदि सर्वहारा वर्ग की पीड़ा का वर्णन करते हुए उनके पति मानवीय दृष्टि रखी है। 'खुरदरे पैर' शीर्षक कविता में कवि ने रिक्शेवाले के जीवन की यथार्थ झांकी प्रस्तुत की है जिसके जीवन में सुख नाम की कोई चीज नहीं है। जैसे–
''धंस गये/ कुसुमकोमल मन में/ गुठल हारठोंवाले कुलिश कठोर पैर दे रहे गति/ रबड़ विहीन ठूंठ पैंडलों को/ चला रहे थे/ एक नहीं/ दो नहीं, तीन–तीन चक्र/कर रहे थे मात्र त्रिविकम वामन के पुरानें पैरों की।''[6]

नागार्जुन अपनी कविता में उन शोषित शक्तियों का विरोध करते हैं जो निम्न मध्यवर्ग की जिंदगी की दुरावस्था और फटेहाली का कारण है। उन्होंने पुँजीवादी, साम्राज्यवादी, संप्रदायवाद सभी का विरोध किया है जिसमें श्रमिक, शोषित वर्ग और किसानों को उनके श्रम का उचित मान मिल सके। अकाल और बाढ़ का दुष्प्रभाव धनिकों को नहीं भोगना पड़ता। हर हाल में श्रमिक और किसान पिसता है। धनिक जन तो कॉफी की चुस्कियाँ लेते हुए अखबारों में छपी खबरों का जायजा लेते रहते हैं।
आधुनिक युग अनास्था और निराशा का युग है। जहाँ अवसरवादिता, स्वार्थी राजनीति, भाई–भतीजावाद, आर्थिक विषमता, सांप्रदायिकता, बेकारी–दरिद्रता, मोह भंग, धर्मान्धता आदि निराशाजनक बातें है। ऐसी परिस्थितियों में सबका नाराज होना उचित है, किन्तु ऐसी स्थिति में भी नागार्जुन के काव्य में आशावाद प्रखर रूप से उभरा है। जीवन में मनुष्य आशा के सहारे जीता है। मुसीबतों को सहता रहता है। उसे यह विष्वास होता है कि इन विपरीत परिस्थितियों में एक दिन अवष्य परिवर्तन होगा। नागार्जुन अनाास्था एवं कायरता के कवि नहीं, बल्कि आस्था और आशावदी कवि हैं। वे मानते हैं कि हर वक्त परिस्थितियाँ एक सी नहीं रहती, उनमें परिवर्जन आता ही रहता है। 'नवयुग का आरंभ' नामक कविता में हमें यही आशावाद दिखाई देता है। नागार्जुन भेदभाव, शोषण, अन्याय मिटाकर सद्भाव, सहयोग आदि का निर्माण करना चाहते हैं। उन्हें ऐसा लगता है कि एक दिन ऐसा आयेगा जब किसान और मजदूर राज्य करेंगे। यही आशावादी प्रकृति नागार्जुन की निम्नलिखित पंक्तियों में दिखाई देता है।

''बढ़े सहयोग भेद मिट जाए, मिटे शोषण का नाम–निशान
ढ़हे अन्यायों की दिवार, सुखी होवें मजदूर–किसान
हो न फूट सहयोग–भावना सब में घर कर जाए
जन–जन में सहयोग बढ़े विकसित हो खूब समाज
युग पलटा है अब किसान मजदूर करेंगे राज।''[7]

निष्कर्ष

नागार्जुन सजग रचनाकार हैं। वे शोषण से मुक्ति एवं आर्थिक समानता पर विशेष जोर देते हैं। जहाँ किसी का शोषण न हो और न भूखा रहे। कवि व्यक्तिगत संपत्ति की अपेक्षा सामूहिक संपत्ति पर अधिक बल देते हैं। नागार्जुन श्रमशील समाज के प्रतीक है। नागार्जुन की कविताओं में मानवीय कार्य व्यापारों का चित्रण हुआ है। चाहे वह किसानों का हो या मजदूरों का।

सारांश

नागार्जुन को मजदूर, श्रमिकों की मजबूरी अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है। यही कारण है कि व्यक्तिगत ईमानदारी और नैतिकता का स्रोत सामंतवाद नहीं भारत के सर्वसाधारण श्रमिक जनता है। इसलिए सामंती पूँजीवादी के विरूद्ध नागार्जुन ने शोषित, दलित, मजदूर जनता को अपनी कविता का विषय बनाकर उनके भीतर सामंतों के खिलाफ लड़ने की, आवाज उठाने की अजेय शक्ति का संचार किया है।

संदर्भ

1. प्रगतिशील कविता के सौन्दर्य मूल्य, डॉ0 नामवरसिंह पृ0–170
2. नागार्जुन, संपादक–प्रभाकर माचवे, पृ0–10
3. भारत वर्तमान और भावी, रजनी पामदत्व, पृ0–90
4. तमालाब की मछलियाँ, नागार्जुन, पृ0–23
5. आधुनिक कविता : प्रमुख वाद प्रवृतियाँ, डॉ0 दुर्गाशंकर मिश्र, पृ0–53
6. सतरंगे पंखों वाली, नागार्जुन, पृ0–23
7. नागार्जुन रचनावली खण्ड–1, पृ0–226